6

भाई ! कहा देख गरवाना रे

भाई! कहा देख गरवाना रे
गहि अनन्त भव तैं दुख पायो, सो नहिं जात बखाना रे ।। भाई. ।।

माता रुधिर पिताके वीरज, तातैं तू उपजाना रे ।
गरभ वास नवमास सहे दुख, तल सिर पाँव उचाना रे ।। भाई. ।।1 ।।

मात अहार चिगल मुख निगल्यो, सो तू असन गहाना रे ।
जंती तार सुनार निकालै, सो दुख जनम सहाना रे ।। भाई. ।। 2 ।।

आठ पहर तन मलि मलि धोयो, पोष्यो रैन बिहाना रे ।
सो शरीर तेरे संग चल्यो नहिं, छिनमें खाक समाना रे ।। भाई. ।।3।।

जनमत नारी, बाढ़त भोजन, समरथ दरब नसाना रे ।
सो सुत तू अपनो कर जानै, अन्त जलावै प्राना रे ।। भाई. ।।4 ।।

देखत चित्त मिलाप हरै धन, मैथुन प्राण पलाना रे ।
सो नारी तेरी ह्वै कैसे, मूवें प्रेत प्रमाना रे ।। भाई. ।।5 ।।

पाँच चोर तेरे अन्दर पैठे, तें ठाना मित्राना रे ।
खाय पीय धन ज्ञान लूटके, दोष तेरे सिर ठाना रे ।। भाई ।।6 ।।

देव धरम गुरु रतन अमोलक, कर अन्तर सरधाना रे ।
'द्यानत' ब्रह्मज्ञान अनुभव करि, जो चाहे कल्याना रे ।। भाई ।।7 ।।

अरे भाई! क्या देखकर तुम इतना गर्व कर रहे हो ? अनंत भव धारण कर तुमने जो दुःख पाया है, उन दुःखों का वर्णन किया जाना संभव नहीं है ॥टेक॥

माता के रज, पिता के वीर्य से तेरी उत्पत्ति हुई। गर्भ में 9 महीने दुःख पाए, जहाँ सिर नीचे और पांव ऊपर किये रहे ॥1॥

गर्भवास में माता ने मुंह से चबाकर जो आहार निगला, वह भोजन ही तुझे खाने को मिला। जैसे सुनार जंत्री में तार खींचता है, जन्म के समय इस प्रकार गर्भ से तुझे बाहर निकाला, अनन्त वेदना तूने भोगी ॥2॥

आठों पहर इस शरीर की स्वच्छता के लिए बार-बार तन धोता रहता है और दिन-रात इसके पोषण में लगा रहता है। वह शरीर तेरे साथ नहीं चलता और क्षण मात्र में खाक में मिल जाता है ॥3॥

यह देह स्त्री के द्वारा उत्पन्न की जाती है, भोजन के द्वारा यह बढ़ती है, बड़ी होती है। तू जिस पुत्र को अपना जानता है वही तुझे, तेरी इस देह को अंत में जला देता है ॥4॥

स्त्री, जो देखते ही मन का हरण कर लेती है, उससे मिलाप होता है तो धन हर लेती है और मैथुन में शक्ति का हरण कर लेती है। तेरे मरते ही जो तुझे भूत के समान मानने लगती है, वह नारी तेरी कैसे हैं? ॥5॥

पांच चोर (इंद्रियाँ) तेरे भीतर बैठे हैं, उनसे तूने मित्रता कर रखी है वह खा-पीकर तेरे ज्ञान धन का नाश करके सारा दोष तेरे ही सिर मंढ़ देंगे ॥6॥

अरे! देव-गुरु-धर्म ये अनमोल रतन हैं। इनमें अंतरंग से श्रद्धा कर। द्यानतरायजी कहते हैं कि जो तू अपना कल्याण चाहता है तो ब्रह्म ज्ञान का अर्थात अपनी आत्मा का अनुभव कर ॥7॥